MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - I

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1. (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) समझकर लिखिए। **2**

(i) सृष्टि के द्रव्य और मनुष्य का शरीर श्रम

(ii) शारीरिक श्रम व बौद्धिक श्रम

(iii) नानाविध द्रव्य तथा प्राकृतिक साधनों से

(iv) शरीर श्रम के बिना

(2) वाक्य पूर्ण कीजिए। **2**

(i) जो केवल व्यवस्था करते हैं।

(ii) जो प्रत्यक्ष शरीर श्रम के काम करते हैं।

(3) सारिणी पूर्ण कीजिए। **2**

गद्यांश में प्रयुक्त 'इक' प्रत्यय वाले दो शब्द	निम्न शब्दों को उचित प्रत्यय लगाइए।
(i) बौद्धिक	(i) **शरीर** : शारीरिक
(ii) प्राकृतिक	(ii) **श्रम** : श्रमिक

(4) **2**

श्रम यानी मेहनत और मेहनत को ही भगवान कहा गया है। श्रम के भले ही अलग-अलग रूप क्यों न हों, श्रम आखिर श्रम ही होता है। श्रम करने से व्यक्ति का विकास होता है। श्रम करने से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। किसान एवं मजदूर लोग शारीरिक श्रम करते हैं; तो बुद्धिजीवी वर्ग जैसे-डॉक्टर या वैज्ञानिक बौद्धिक श्रम करते हैं। इन सबकी समाज में प्रतिष्ठा होती है। सभी को किए हुए श्रम का पारिश्रमिक मिलता है। इससे उनका गुजर-बसर संभव होता है। जो व्यक्ति श्रम नहीं करता, उसका जीवन व्यर्थ होता है। बिना श्रम के समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना चाहिए।

उ. 1.	**(ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	**(8)**
(1)	**(i) कृति पूर्ण कीजिए।**	**1**

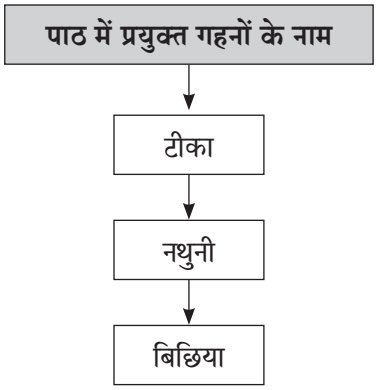

	(ii) परिणाम लिखिए। तब लोग हँसेंगे और कहेंगे कि प्रधानमंत्री की पत्नी के पास पहनने के लिए गहने भी नहीं हैं।	**1**
(2)	**(i) उपर्युक्त गद्यांश से ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** (1) शास्त्री जी ने अपनी पत्नी से किस चीज़ की माँग की ? (2) टीका, नथुनी और बिछिया किसकी निशानी थी ?	**1**
	(ii) उत्तर लिखिए। (1) अपने पत्नी को सुख नहीं दे सके। (2) उनके पति श्री लालबहादुर शास्त्री	**1**
(3)	**(i) निम्नलिखित शब्दों के कृदंत रूप लिखिए।** (1) हिचकिचाहट - हिचकिचाना (2) मुस्कुराई - मुस्कुराना	**1**
	(ii) वचन बदलिए। (1) नथुनी - नथुनियाँ (2) बिछिया - बिछियाँ	**1**
(4)	साहस व बहादुरी ये उच्च मानवीय गुण हैं, ये गुण जिनके पास होते हैं, वे दीन-दुखी, गरीब, बेबस जनता की सहायता करने के लिए आगे आते हैं। मदर टेरेसा, बाबा आमटे, नेल्सन मंडेला आदि महापुरूषों के पास सच्चा साहस व सच्ची बहादुरी थी। अत: उन्होंने गरीबों की सेवा की थी। दूसरों की सहायता करना साहसी व बहादुर का धर्म होता है। दूसरों का विनाश करना कायरता होती है।	**2**
उ. 1.	**(ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(8)**
(1)	**कृति पूर्ण कीजिए।**	
	(i)	**1**

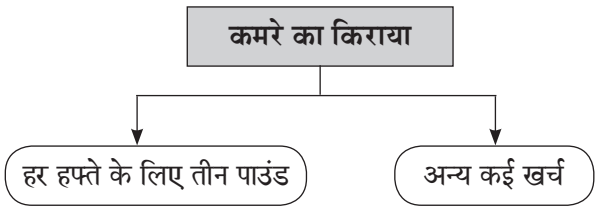

(ii)

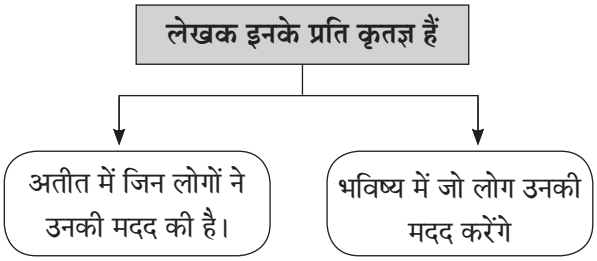

1

(2) **उत्तर लिखिए।** 2

(i) इंग्लैंड

(ii) अपना कर्तव्य

(iii) सब कुछ के लिए उन्हें अपनी जेब से खर्च करना पड़ता है और उनकी आमदनी कम है।

(iv) आत्मरक्षा

(3) **लिंग पहचानकर लिखिए।** 2

(i) जेब - स्त्रीलिंग (iii) साहित्य - पुल्लिंग

(ii) दावा - पुल्लिंग (iv) सेवा - स्त्रीलिंग

(4) 'कृतज्ञता' का अर्थ है कृतज्ञ होने का भाव। यह एक महान गुण है। यह मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है, जिसे धारण करने से हमारा भी भला होता है और दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। जब कोई व्यक्ति हमारे लिए कुछ करता है, तो उसके प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए। ईश्वर ने हमें सब कुछ दे दिया है, अत: हमें उसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। हम अपने प्रति कभी भी और किसी भी रूप में की गई सहायता के लिए आभार प्रकट करते हैं और कहते हैं कि 'हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं और इसके बदले में जब भी अवसर आएगा, अवश्य ही सेवा करेंगे।' इसलिए कहा गया है कि 'कृतज्ञता मनुष्य की अनमोल निधि है।' 2

विभाग 2 - पद्य

उ. 2. **(च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** (6)

(1) **(i) आकृति पूर्ण कीजिए।**

(1)

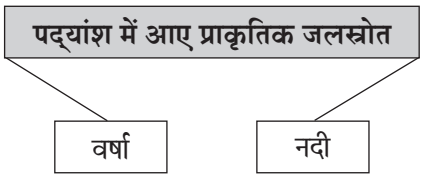

1

(2)

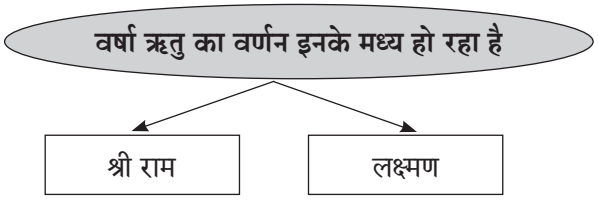

1

	(ii) निम्नलिखित अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए। (1) बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे। (2) दामिनि दमक रहहिं घन माही। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं।	**1**
(2)	**ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** (i) अपने किनारों को किसने तोड़ दिया है? (ii) सज्जन मनुष्य के पास क्या होता है?	**1**
(3)	**निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में इधर-उधर भटक रहे हैं। वर्षा ऋतु प्रारंभ हो गई है। ऐसे में श्री राम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं- ''हे लक्ष्मण! देखो, आकाश में बादल बड़े अभिमान के साथ घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं, प्रियतमा सीता के बिना मेरा मन बहुत डर रहा है। बिजली की चमक बादलों में रह-रह कर हो रही है, वह में ठहरती ही नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे दुष्ट की प्रीति कभी स्थिर नहीं रहती।''	**2**
उ.2.	**(छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए:**	**(6)**
(i)	**अपनी गंध नही बेचूँगा**	
	(1) **रचनाकार का नाम**: बालकवि बैरागी	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : गीत	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण**: उपर्युक्त पंक्ति में फूल अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए मर जाना और मरकर मिट्टी में झर जाना अधिक पसंद करता है। वह इस निर्णय पर किसी भी कीमत पर अडिग रहना चाहता है। यदि व्यक्ति में सम्मान और स्वाभिमान की भावना न हो तो उसका जीवन निरर्थक होता है।	**2**
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा**: स्वाभिमान ही जीवन है। स्वाभिमान के बिना जीवन निरर्थक होता है। स्वाभिमान से व्यक्ति की सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है।	**1**
	अथवा	
(ii)	**कृषक गान**	
	(1) **रचनाकार कवि का नाम** - कवि दिनेश भारद्वाज	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** - आधुनिक सामाजिक काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** - क्षीण निज बलहीन तन को, पत्तियों से पालता जो, ऊसरों को खून से निज, उर्वरा कर डालता जो, (विद्यार्थी अपनी पसंदीदा काव्य पंक्ति लिख सकते हैं।)	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण** - उपर्युक्त पंक्ति में किसान की दुर्दशा का वर्णन किया गया है। परिस्थिति प्रतिकूल होने के बावजूद भी किसान कड़ी मेहनत करता है और बंजर जमीन को उपजाऊ बनाता है। अर्थात प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह	**2**

	हिम्मत नहीं हारता बल्कि संघर्ष करता रहता है। इसलिए यह पंक्ति मुझे बेहद पसंद है।	
	(5) **रचना से प्राप्त प्रेरणा -** किसान हमारे देश का अन्नदाता है, परंतु आज वह जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम सब भारतीय एकत्रित होकर किसान को उसका खोया सम्मान एवं प्रतिष्ठा स्थापित करके रचनात्मकता की ओर एक अभियान चलाएँ।	**1**
	अथवा	
(iii)	**समता की ओर**	
	(1) **कविता के कवि/रचनाकार का नाम** : कवि मुकुटधर पांडेय	**1**
	(2) **काव्य प्रकार** : छायावादी काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा, भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण** : प्रस्तुत पंक्तियाँ समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है। इन पंक्तियों में समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके समता स्थापित करने की बात बताई गई है। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियाँ मुझे बेहद पसंद हैं।	**2**
	(5) कविता से प्राप्त संदेश : विश्व-बंधुत्व जैसी मानवीय भावना को अपनाकर एक-दूसरे के साथ बंधुत्व का व्यवहार करना।	**1**
उ.**2**.	**(ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**(i) आकृति पूर्ण कीजिए।**	**1**
	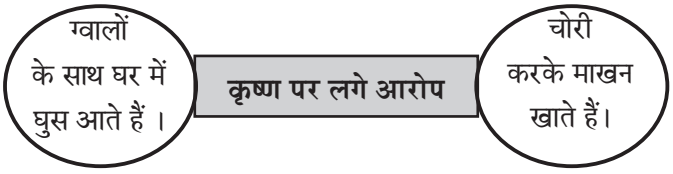	
	(ii) कृति पूर्ण कीजिए।	**1**
	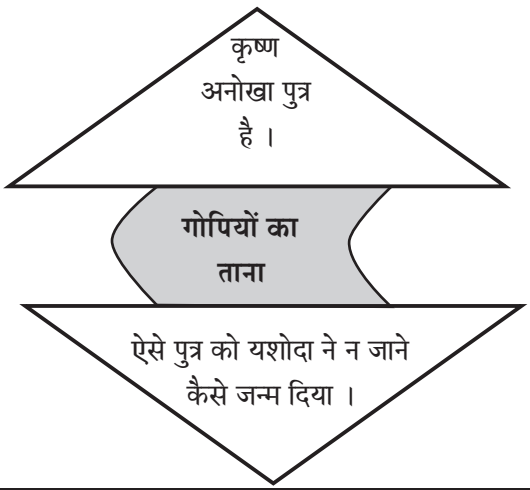	

(2) (i) (1) दूध (2) दही ½

(ii) (1) कृष्ण की माता का नाम बताइए। ½
(2) शिकायत कौन कर रही हैं?

(3) **(i) मानक हिंदी भाषानुसार कविता में प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए।** **1**
(1) खवायो - खिलाया (2) जायो - जन्म देना

(4) **निम्नलिखित पठित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** **2**

प्रस्तुत पंक्तियों में गोपियाँ माता यशोदा से कृष्ण की शिकायत करती हैं। वे कहती हैं कि आपका बेटा हमारे घरों में रोज घुसकर दूध-दही खा जाता है। खाते-खाते बहुत सारा दूध-दही गिरा भी देता है, जिससे दूध-दही का नुकसान भी होता है। गोपियाँ कहती हैं कि दिन-प्रति-दिन गोरस की हानि हो रही है। तुम्हारा बेटा न जाने किस ढंग से पैदा हुआ है? सूरदास जी कहते हैं कि ब्रजनारियाँ यशोदा मैया से कहती हैं कि तुमने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है।

विभाग 3 - पूरक पठन

उ. 3. **(अ) गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** **(4)**

(1) **(i) कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

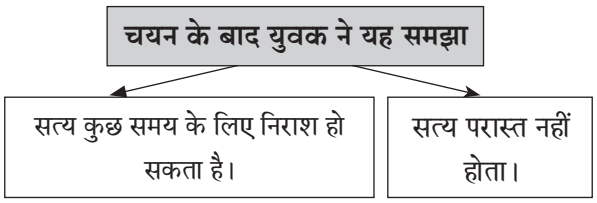

(ii) कृति पूर्ण कीजिए। **1**

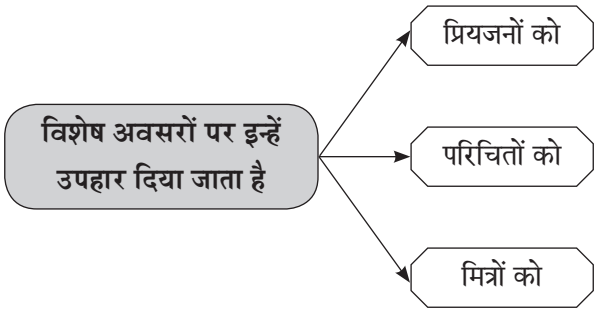

(2) इस लघुकथा में एक युवक नौकरी हेतु कई स्थानों पर साक्षात्कार के लिए जाता है। योग्यता होने के बावजूद भी भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था के कारण उसे कहीं पर भी नौकरी नहीं मिलती। अंत में वह एक ऐसी जगह पर साक्षात्कार के लिए जाता है; जहाँ पर उपस्थित अधिकारी उससे भ्रष्टाचार एवं रिश्वत के बारे में उसकी व्यक्तिगत राय पूछते हैं। युवक के हृदय में भ्रष्टाचार एवं रिश्वत को लेकर जो आंतरिक पीड़ा **2**

थी, उसे वह सहज एवं स्पष्ट शब्दों में व्यक्त कर देता है। वह प्रश्न के सही उत्तर देता है क्योंकि उसने स्वयं इस भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को बारीकी से देखा है। युवक द्वारा सही उत्तर मिलने पर उपस्थित अधिकारी नौकरी के लिए उसका चयन करते हैं।

उ. 3. (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(4)**

(1) **(i) वर्गीकरण कीजिए।** **1**

ऐतिहासिक	पौराणिक
जयमल	ध्रुव, प्रह्लाद, भरत

(ii) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए। **1**

(1) प्रह्लाद (2) जयमल

(2) **2**

''मंजिलें उन्हीं को ही मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है।
पंख से कुछ नहीं होता
हौसलों से उड़ान होती है।''

सचमुच जीवन में यदि सफल बनना है तो व्यक्ति को जिद, लगन एवं मेहनत करनी होगी। व्यक्ति के पास जिद का होना अत्यावश्यक होता है। व्यक्ति को कुछ बनने की जिद, लगन की ओर ले जाती है। व्यक्ति अपनी मंजिल पाने के लिए कड़ी मेहनत करना शुरू कर देता है। आहिस्ता-आहिस्ता उसकी मेहनत रंग लाती है और वह अपना मनचाहा ध्येय प्राप्त कर लेता है। दुनिया में जो भी सफल महापुरुष हुए हैं, उन्होंने भी अपने जीवन में जिद, लगन, मेहनत एवं अभ्यास को महत्व दिया था। इसी कारण ही वे सफलता की मंजिल हासिल कर सकें। इसलिए व्यक्ति को जिद, लगन एवं मेहनत के साथ अपनी लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

विभाग 4 - व्याकरण

उ. 4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(18)**

(1) **(i) निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** **1**

कहानी : जातिवाचक संज्ञा **समाज** : जातिवाचक संज्ञा

(ii) निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम का प्रयोग कीजिए। **1**

<u>वह</u> इसके पहले उसे मना करता।

(2) **(i) निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **1**

आगे : क्रियाविशेषण अव्यय

(ii) निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। **1**

<u>**वाह!**</u> : विस्मयादिबोधक अव्यय :

वाक्य - <u>वाह!</u> क्या ताज है।

(3) **कालपरिवर्तन कीजिए।**

(i) सरकार एक ही टैक्स लगाएगी। **1**

(ii) आप इतनी देर से नाप-तौल कर रहे हैं। **1**

(4) **तालिका पूर्ण लिखिए ।** **2**

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
दिग्दर्शक	दिक् + दर्शक	व्यंजन संधि
महात्मा	महा + आत्मा	स्वर संधि

(5) (i) **अर्थ के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

ओह! कंबख्त ने कितनी बेदर्दी से पीटा है। (विस्मयार्थकवाक्य)

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

क्या मानू इतना ही बोल सकी ?

(6) (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

फूट-फूटकर रोना : बिलख-बिलख कर रोना

वाक्य: इकलौते बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर माँ **फूट-फूट कर रोने लगी।**

(ii) **निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

क्या आपने मेरी **इज्जत उतारने** के लिए यहाँ बुलाया था ?

(7) **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।**

(i) सामने शेर देखकर यात्री के प्राण मानो मुरझा गए। **1**

(ii) मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ। **1**

(8) **निम्न वाक्यों में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए।** **1**

मुख्य क्रिया - पटक सहायक क्रिया - दिया (देना)

(9) **निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।** **1**

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	फैलना	फैलाना	फैलवाना
(ii)	बैठना	बिठाना	बिठवाना

(10) **निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुन: लिखिए।** **1**

''जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा।'

(11) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए।** **1**

बुद्धिराम स्वभाव **के** सज्जन थे।

के - संबंध कारक

विभाग 5 - रचना विभाग

(32)

उ.5. (i) (अ) 5

दिनांक : १ मार्च, २०१८
सेवा में,
व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक औषधि भंडार,
नागपुर।

विषय : आयुर्वेदिक औषधि की माँग हेतु निवेदन पत्र

महोदय,

मैं विजय मोहिते समय-समय पर आपसे आयुर्वेदिक औषधियाँ मँगवाता आ रहा हूँ। उन औषधियों के सेवन से मुझे बहुत आराम मिला है। अत: इस बार भी मुझे निम्न आयुर्वेदिक औषधियों की आवश्यकता है :

आयुर्वेदिक औषधि	मात्रा
झण्डू च्यवनप्राश	५०० ग्राम के दो डिब्बे
झण्डू पाचक रस	५०० मिली ली. की तीन शीशी
हिमालय पीड़ाहारी बाम	५० ग्राम की दो शीशियाँ
हिमालय तेज कांति चूर्ण	५०० ग्राम की तीन बोतलें
हिमालय शक्तिवर्धक रस	५०० मिली ली. की चार बोतलें
द्राक्षासव	५०० मिली ली. की चार बोतलें
कायम चूर्ण	५०० ग्राम की दो बोतलें

कृपा करके उपर्युक्त औषधियाँ जल्द-से-जल्द कुरिअर द्वारा भेजने की व्यवस्था करें। जैसे ही औषधियाँ प्राप्त हो जाएँगी वैसे ही बकाया रकम आपके पास भेज दी जाएगी। अग्रिम राशि के तौर पर १००० रूपए का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ। आशा है कि आप जल्द-से-जल्द औषधियाँ भेजेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
विजय मोहिते।

प्रेषक
वरदा सोसायटी,
विजयनगर,
जालना।
ई-मेल आईडी : vijay123@gmail.com

अथवा

(ii)	१० मई, २०१८ प्रिय मित्र राम, सप्रेम नमस्ते। कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला है। यह बहुत ही गर्व की बात है इसलिए तुम्हारा अभिनंदन करने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। राम तुम बचपन से ही भाषण-कला में निपुण रहे हो। तुम्हारे पास किसी भी विषय पर खुलकर बात करने का कौशल है। तुम वाचन-कौशल में भी निपुण हो। इसी कारण किसी भी विषय पर तुम अपने विचार व्यक्त कर सकते हो। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हारा अभिनंदन किया है। राम तुम मेरे मित्र हो, इस बात का मुझे बहुत गर्व है। जल्द ही छुट्टियाँ शुरू होने वाली हैं, तब मैं तुमसे भाषण कला के कौशल सीखने वाला हूँ। आशा करता हूँ कि तुम छुट्टियों में मेरे घर अवश्य आओगे। तुम्हारा प्रिय मित्र, कुमार राजेश मेहता २०२, हरि निवास, गांधी नगर, मुंबई - ४०० १०४. **ई-मेल आई डी** : rajesh45@gmail.com	**5**
	अथवा	
(2)	(i) श्री. सी. वी. रामन ने कौन-से क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश-विदेश में जमा लिया था ? (ii) ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कौन कर रहा था ? (iii) रामन का साथी अपनी कठिनाइयाँ लेकर किसके पास गया ? (iv) रामन का साथी जोन्स साहब के पास क्यों गया ? (v) रामन की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा किसने की ?	**5**
उ.6.		
(1)	**वृत्तांत लेखन ।** **दिनांक १५ सितंबर २०१७ मुंबई:** शारदा विद्यालय, मुंबई में दिनांक १४ सितंबर २०१७ के दिन सुबह ९:०० बजे बाल-दिवस के अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य जी ने छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। सुबह ठीक ९ बजे विद्यालय के सभागार में समारोह की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य श्री. राजेश शिंदे जी ने सभी छात्रों को संबोधित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पश्चात विद्यालय की कुछ महिला अध्यापिकाओं ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जैसे ही नृत्य खत्म हुआ वैसे ही छात्रों के लिए कई प्रकार के खेलों का आयोजन किया गया। खेल खेलते समय छात्रों का उत्साह देखने लायक था। सभी छात्रों ने बाल–दिवस के अवसर पर विद्यालय में उपस्थित सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिए। इस प्रकार १ बजे समारोह खत्म हुआ।	**5**

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** **5**

पुस्तक प्रेमियों व पाठकों के लिए स्वर्णिम अवसर

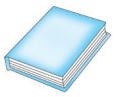

इंद्रलोक सभागृह में दिनांक ६ दिसंबर २०१७ भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

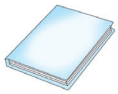

विज्ञान, गणित, भाषा व साहित्य विषयक पुस्तकों की प्रदर्शनी!

शैक्षणिक, व्यावसायिक, साहित्यिक पुस्तकों का भंडार!

विविध ज्ञानप्रद पुस्तकें, शैक्षणिक, नैतिक मूल्य, नवीन शोध - प्रविधियों से परिपूर्ण पूस्तकें

पुस्तक की खरीदी पर **३०%** छूट

पुस्तक है हम सबकी सच्ची साथी ।
आओ जलाएँ इनसे ज्ञान की बाती।

तिथि : ६ दिसंबर २०१७
समय : प्रात: १० से रात ९ बजे तक

(3) **चाँद का प्रतिबिंब** **5**

एक घना जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के प्राणी रहते थे। उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। वह दिखने में बहुत ही सुंदर एवं प्यारा था। उसका श्वेत वर्ण देखकर सभी प्राणी उससे ईर्ष्या करते थे। उसने मिट्टी में अपना बिल बनाया था।

खरगोश बहुत डरपोक था। वह हर दिन हरी घास खाता था। घास खाते समय हवा का झोंका आने पर वह डर जाता था और अपने बिल में घुस जाता था। पूर्णिमा की रात थी। आसमान में चंद्रमा उदित हो गया था। रात में चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश था। खरगोश को लगा कि अब दिन निकल आया है। क्यों न अब स्नान किया जाए, यह सोचकर वह तालाब की ओर बढ़ा। तालाब के पास आकर उसने देखा कि एक पूर्ण गोलाकार श्वेत रूप तालाब के पानी में गिर पड़ा है। उसने पहले ऐसा श्वेत वर्णिय गोल पानी में कभी नहीं देखा था। उसे लगा कि यह गोल आकार का कोई कागज का टुकड़ा होगा। पर उसने सोचा कि यदि वह कागज का टुकड़ा होता तो अब तक गल जाता। जरूर यह कोई जादुई पत्थर है। वह भयभीत हो गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी चिल्लाहट सुनकर सभी प्राणी तालाब के किनारे आ पहुँचे। जब उन्हें खरगोश के चिल्लाने का कारण समझा तब वे सभी मिलकर खरगोश की मूर्खता पर हँसने लगे। उन्होंने कहा कि यह कोई गोल कागज या जादुई पत्थर नहीं है बल्कि यह चाँद का प्रतिबिंब है। यह सुनकर खरगोश लज्जित हो गया और उसे अपनी मूर्खता का भी एहसास हो गया। वह दुम दबाकर वहाँ से भाग निकला और अपने बिल में जाकर सो गया और उधर आसमान में चंद्रमा का प्रज्वलित रूप निशा को प्रकाशमय बनाने में व्यस्त था....।

सीख : सोच-समझकर कार्य करना चाहिए। जो बिना सोचे-समझे काम करता है, वह अंत में मूर्ख बन जाता है।

(4) (i) **किसी पालतू प्राणी की आत्मकथा** **7**

''ठहरिए, कहाँ जा रहे हो ? तनिक रुककर मेरी कहानी सुनिए।

मैं हूँ तकदीर का मारा, बेचारा, वृद्ध जानवर। मैं एक अल्सेसिशयन प्रजाति का कुत्ता हूँ। मैं भारत में इटली से आया था। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। दरअसल मुझे कुछ लोगों ने मेरे माँ-बाप से अलग कर भारत में बेचने के लिए भेजा था। जब मुझे भारत में लाया जा रहा था तब मैं बहुत दुखी था मुझे बार-बार अपने माता-पिता की याद आ रही थी; लेकिन मेरा दुखड़ा कौन सुनता ?

प्राणियों की एक बड़ी दुकान में मुझे बेचने के लिए रखा गया। मेरी कीमत भी अधिक थी। हर दिन कई लोग आते व मुझे देखते रहते। एक दिन एक अमीर आदमी दुकान में आया और उसने मुझे खरीद लिया। वह मुझे अपने घर ले गया। उसका घर क्या था ? बहुत ही बड़ा बंगला था उसका। उसके घर में ढेर सारे नौकर थे। मेरे लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था की गई। उसका एक बेटा था। वह मुझे देखकर बहुत ही खुश हुआ और मेरे साथ खेलने लगा। जल्द ही हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए। आहिस्ता-आहिस्ता मैं अपने माता-पिता को भूल गया और उस संपन्न घर में बड़े ही आराम से रहने लगा।

समय अपनी अबाध गति से बीतता रहा। मैं बड़ा हो गया। मैं उनके घर की रखवाली करने लगा। मेरे होते हुए किसी की क्या मजाल कि कोई किसी चीज को छू ले। यहाँ तक कि घर के सारे नौकर भी मुझसे डरते थे। मेरे लिए खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। दिन में चार बार मुझे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें दी जाती थीं। मैं भी भरपेट खाना खाता था और बंगले में चारों ओर स्वच्छंद विचरण करता रहता था। घर के सभी सदस्य मुझसे बहुत प्यार करते थे। मुझे ऐसा लगने लगा था कि मानो, मेरे मन की मुराद पूरी हो गई हो।

वृद्धावस्था से क्या कोई निजात पा सकता है ? मैं भी वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। तब घर के सारे सदस्यों पर मैं बोझ बनने लगा। घर के लोग मुझे खाना तो देते थे, पर पहले जैसा प्यार नहीं करते थे; मुझे दुलारते नहीं थे। मैं बीमार रहने लगा। तब एक दिन घर के मालिक ने मुझे अपनी आलीशान कार में बिठाकर घर से दूर सड़क के एक किनारे छोड़ दिया। तब से मैं अकेला हो गया हूँ। अब मेरे पास जीवन जीने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। यह इंसान कितना निर्दयी और स्वार्थी है। उसे जब अपना जी बहलाने के लिए किसी की जरूरत होती है; तब वह उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है और जब उसका जी भर जाता है, तब वह उस चीज को अपने जीवन से दूर कर देता है। क्या खूब ! आखिर, यही होते हैं इंसान के जीवन के असली रंग। खैर कोई बात नहीं, जिस ईश्वर ने मुझे जन्म दिया है, आखिर वही मेरी हिफाजत करेगा।''

(ii) **'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता'** **7**

हर इंसान का अपना एक आशियाना होता है। वह अपने आशियाने को बहुत सुंदर तरीके से सजाता है। सभी चाहते हैं कि उसका घर बहुत ही खूबसूरत एवं दूसरे से अनूठा हो। इसलिए इंसान प्रकृति की गोद में अपना एक फार्म हाउस भी तैयार करता है। मैं स्वयं भी अपने घर के बारे में सोचता हूँ। सोचते-सोचते अचानक मेरे मन में यह प्रश्न पैदा हुआ कि यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता, तो.....।

बचपन से ही मुझे आसमान, सितारे, चाँद, सूरज आदि का बहुत ही आकर्षण रहा है। उन्हें देखकर मुझे खुशी का अनुभव होता है। इसलिए काश ! मेरा घर अंतरिक्ष में होता ... बहुत ही मजा आता। तब मैं

अपने आप पर गर्व महसूस करता, क्योंकि दुनिया के कुछ गिने-चुने लोग ही अब तक अंतरिक्ष की सैर कर पाए हैं। मैं भी बड़े मजे से अंतरिक्ष की सैर करता। वहाँ पर मुझे सारे अजीबो-गरीब अनुभव होते। वहाँ पर रहकर मैं कभी रो नहीं सकता, क्योंकि वहाँ पर इंसान के आँसू कभी भी नीचे नहीं गिर सकते। वहाँ का वातावरण अलग प्रकार का होता है। अंतरिक्ष में जब हर दिन सूर्य के दर्शन करूँगा, तो वह मुझे काला दिखाई देगा।

यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता; तो मैं उल्कापिंड, आकाशगंगा आदि को निकट से देखता। उनके बारे में जानकारी हासिल करता। अंतरिक्ष में रहकर मैं इस बात का अनुभव ले पाता कि दो धातु के टुकड़े एक-दूसरे से स्पर्श हो जाने से वे स्थायी रूप से जुड़ जाते हैं।

अंतरिक्ष में रहकर मैं नई-नई खोज करता। कैंसर जैसी भयानक बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए औषधि का निर्माण करता।

ये तो सारी हुई कल्पना की बातें। वास्तव में यदि मुझे अंतरिक्ष में जाना है, तो मुझे पहले मन लगाकर पढ़ाई करनी पड़ेगी और आगे चलकर अंतरिक्ष-विज्ञान का अभ्यास करना पड़ेगा। इसके लिए मैं प्रतिबद्ध हूँ।

❖❖❖